भारतीय ज्ञान परंपरा, वैदिक शास्त्र व वैदिक संस्कृति का वैश्वीकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)

डॉ. दिग्विजय सिंह राजपूत, इग्नू, नई दिल्ली
प्रो. अरबिंदो महतो, इग्नू, नई दिल्ली

संक्षेप

वैश्विक परिदृश्य के तीव्र विकास को देखते हुए, वैदिक शास्त्रों और संस्कृति में निहित कालातीत ज्ञान और विविध परंपराओं का संरक्षण और व्यापक प्रसार अत्यावश्यक होता जा रहा है। इस लक्ष्य को प्रभावी ढंग से प्राप्त करने हेतु, वैश्वीकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी नवीन पद्धतियों को अपनाना अपरिहार्य है। आधुनिक तकनीक के विवेकपूर्ण और नैतिक रूप से निष्ठावान उपयोग के माध्यम से, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की परिवर्तनकारी क्षमता का उपयोग भारत की गहन ज्ञान विरासत को वैश्विक समुदाय तक प्रसारित करने के एक सशक्त साधन के रूप में किया जा सकता है। यह परिवर्तन, अमूल्य आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान करने, नैतिक विकास को बढ़ावा देने और बौद्धिक उन्नति को प्रोत्साहित करने की क्षमता रखता है, जो अंततः मानवता की समग्र प्रगति और कल्याण में योगदान देगा। वेदों की प्राचीन शिक्षाओं को कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अत्याधुनिक क्षमताओं के साथ एकीकृत करके, हमें एक ऐसा अद्वितीय अवसर प्राप्त होता है जिससे हम एक सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित कर सकते हैं, जो न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत की गहराई से जुड़ा है, बल्कि समकालीन युग की आवश्यकताओं के अनुरूप भी है। परंपरा और नवीनता के इस सामंजस्यपूर्ण मिश्रण के माध्यम से, एक प्रबुद्ध और एकीकृत विश्व का मार्ग प्रशस्त होता है, जहाँ वैदिक शास्त्रों में निहित शाश्वत मूल्य और गहन ज्ञान जीवन के प्रत्येक पहलू में व्यक्तियों को एक अधिक संतुष्ट और उद्देश्यपूर्ण अस्तित्व की ओर प्रेरित और प्रकाशित करते रहते हैं।